Question Paper Comp. Delhi 2017 सेट-1
CBSE कक्षा 12 हिन्दी (ऐच्छिक)

सामान्य निर्देशः

- इस प्रश्न-पत्र में 14 प्रश्न हैं।
- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- विद्यार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

खंड-क

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (15)**
कौटिल्य ने जब 'अर्थशास्त्र' लिखा तो उन्हें स्वप्न में भी यह विचार न आया होगा कि राजनीति या नीति सूचक यह अर्थ 'अर्थ' के अन्य सभी अर्थों से हटकर केवल इसके 'रुपया' अर्थ से ही चिपक जाएगा। प्राचीन भारत में अर्थ पुरुषार्थ था, मानवमूल्य था। सबके हित को ध्यान में संग्रह करना और उसका वितरण करना अर्थ है। इसका व्यावहारिक रूप या लौकिक रूप भी है और इसका पारमार्थिक या लोकोत्तर रूप भी है। व्यावहारिक स्तर पर अर्थ धन है, सम्पति है और समस्त चर्चा और ज्ञान का स्थूल विषय है, क्योंकि वह पदार्थ भी है। इस अर्थ से सबका सरोकार है। कामकाज इसके माध्यम से चलता है, लेन-देन चलता है, वार्ता चलती है, बहस चलती है। पर इस अर्थ के साथ भी कुछ जानी-मानी अलिखित शर्त होती हैं, वे सामाजिक स्वीकृति और परस्पर विश्वास पर आधारित होती हैं। आप जो वाक्य कह रहे हैं उसके पीछे आपका मन्तव्य स्पष्ट है और वह वही अर्थ है जो दूसरे को उस वाक्य से स्पष्ट लगता है। यह बात न हो तो आदमी एक-दूसरे से बात न करे। इसी वज़न पर हम किसी से कुछ लेते हैं तो देने वाले को विश्वास रहता है कि हमारी आवश्यकता सही माने में है, लेने वाले को विश्वास रहता है कि देने वाले के पास से वह वस्तु मिल जाएगी।
सहायता देना और लेना दोनों परिस्थिति की विवशता हैं। धन को तो तेल की बूंद की तरह फैलना-ही-फैलना है, क्योंकि लक्ष्मी स्थिर नहीं रह सकती। पर सहायता लेने वाले का भी कर्तव्य होता है कि सहायता लेते समय अपनी आवश्यकता, खर्च करने की अपनी क्षमता और उसके आधार पर अपने को समर्थतर बनाने का संकल्प कितना है, इसे नापे और उसी अनुपात में सहायता ले, उसका उचित उपयोग करे। हिन्दुस्तान का किसान कर्ज़ से बड़ा घबराता रहा है, और हिन्दुस्तान का जमींदार कर्ज़ देना अपनी शान समझता था। आज प्रबुद्ध वर्ग कर्ज़ को शान समझता है और बैंक उसकी इस थोथी शान पर पनप रहे हैं। यह बात और है कि बैंकों से बड़े उद्योगपति अरबों डकार जाते हैं, पर मध्यवर्ग कुर्की भोगने की स्थिति में भी पहुँच जाता है। इनमें कौन सही है, कौन गलत, यह आने वाला समय बतलाएगा।
    i. **उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)**
    ii. **कौटिल्य के प्रयोग और आज के प्रयोग में 'अर्थ' की अर्थयात्रा समझाइए। (2)**
    iii. **अर्थ को पुरुषार्थ के समकक्ष क्यों रखा गया? (2)**
    iv. **व्यावहारिक स्तर पर अर्थ की क्या उपयोगिता है? (2)**

v. **जानी-मानी अलिखित शर्तों से लेखक का क्या अभिप्राय है? (2)**
vi. **लेन-देन करने वालों में परस्पर विश्वास किस आधार पर होता है? (2)**
vii. **सहायता लेते समय लेने वाले से क्या अपेक्षित है? (2)**
viii. **'बैंक' इस थोथी शान पर पनप रहे हैं - टिप्पणी कीजिए। (2)**

उत्तर-

i. -अर्थशास्त्र
-अर्थशास्त्र क्या है?
(अन्य उपयुक्त शीर्षक भी स्वीकारें।)
ii. कौटिल्य के अनुसार अर्थ - राजनीति, नीति, पुरुषार्थ एवं मानव-मूल्य
iii. सबके हित को ध्यान में रखकर संग्रह तथा वितरण के कारण
iv. धन - सम्पत्ति, पदार्थ और समस्त चर्चा एवं ज्ञान का स्थूल विषय
v. लेन-देन में सामाजिक स्वीकृति और परस्पर विश्वास
vi. आवश्यकता का औचित्य समझना और लेने वाले से वापसी का आश्वासन
vii. आवश्यकतानुसार लिए गए धन के खर्च की उपयोगिता एवं क्षमता समझना
viii. -उद्योगपतियों एवं प्रबुद्ध वर्गों द्वारा शान से कर्ज़ लेकर डकार जाना
-उनकी इस प्रवृत्ति से बैंकों की व्यापार वृद्धि

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×5=5)**

हरा-हरा कर, हरा-
हरा कर देने वाले सपने।
कैसे कहूँ पराये, कैसे
गरब करूँ कह अपने !
भुला न देवे यह 'पाना' -
अपनेपन का खो जाना,
यह खिलना न भुला देवे
पंखंड़ियों का धो जाना,
आँखों में जिस दिन यमुना-
की तरुण बाढ़ लेती हूँ
पुतली के बन्दी की
पलकों नजर झाड़ लेती हूँ।
दूर न रह, धुन बंधने दे
मेरे अन्तर की तान,
मन के कान, अरे प्राणों के
अनुपम भोले भान।

रे कहने, सुनने, गुनने
वाले मतवाले यार
भाषा, वाक्य, विराम बिंदु
सब कुछ तेरा व्यापार,
किन्तु प्रश्न मत बन,
सुलझेगा-
क्योंकर सुलझाने से?
जीवन का कागज कोरा मत
रख, तूलिख जाने दे।

i. **आँसू बहने और फिर पोंछ लिए जाने पर कवयित्री ने क्या कल्पना की है? अपने शब्दों में लिखिए।**
ii. **पराजित करके भी मन को प्रसन्न कर देने वाले सपनों को लेकर कवयित्री के मन में क्या द्वंद्व है?**
iii. **मन से स्वयं प्रश्न न बनने का आग्रह क्यों किया गया है?**
iv. **अलंकार पहचानिए और मुहावरे का भाव स्पष्ट कीजिए:**
‘हरा-हरा कर हरा-हरा कर देने वाले सपने’
v. **आशय स्पष्ट कीजिए:**
“जीवन का कागज़ कोरा मत रख, तूलिख जाने दे।”

उत्तर-

i. -यमुना में बहुत तेज बाढ़ आने की कल्पना
-सहज रूप से बाढ़ के पानी का उतर जाना
ii. न ये सपने अपने लगते हैं न पराए
iii. जीवन के सभी व्यापार अनसुलझे ही रहेंगे अतः स्वेच्छा से जीवन के कोरे कागज पर लिख लें।
iv. -अलंकार - यमक, पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, मानवीकरण
-मुहावरे का भाव - मुश्किलों से साकार होने वाली कल्पनाएँ
v. विशेष कर्म की ओर अग्रसर होना और उसे घटित होने देना

खंड-ख

3. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : (10)**
   i. **आतंकवाद की समस्या**
   ii. **मन बदले तो परिस्थितियाँ बदलेंगी**
   iii. **क्या नहीं कर सकती नारी**
   iv. **साहित्य समाज का दर्पण**

उत्तर-

i. निबंध

किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

भूमिका/उपसंहार (1+1)

विषय-वस्तु (6)

भाषा शैली (2)

4. **सड़क दुर्घटनाओं में तत्काल चिकित्सा सुविधा न मिलने के दुष्परिणामों के बारे में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान के दो सुझाव भी दीजिए। (5)**

अथवा

कुछ समाचार चैनल जाँच और सत्यापन किए बिना कभी-कभी ऐसी काल्पनिक घटनाओं के समाचार प्रस्तुत करते हैं जिनसे समाज में वैमनस्य और अशांति फैलने की संभावना हो सकती है। उन पर तुरंत अंकुश लगाने का अनुरोध करते हुए सूचना और प्रसारण मंत्री को पत्र लिखिए।

उत्तर-

1. पत्र-लेखन:
2. आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ (1)
3. विषय-वस्तु (3)
4. भाषा (1)

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : (1×5=5)**
   i. **विशेष लेखन का आशय समझाइए।**
   ii. **शंका-संदेह करना पत्रकार का अच्छा गुण क्यों माना गया है?**
   iii. **मीडिया में द्वारपाल किन्हें कहा जाता है?**
   iv. **हिंदी में कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले किन्हीं दो विदेशी चैनलों के नाम लिखिए।**
   v. **मुद्रण माध्यम की दो विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर-

i. किसी विषय विशेष जैसे राजनीतिक स्वास्थ्य, व्यापार, खेल आदि पर लेखन
ii. शंका - संदेह करने पर ही वह घटना के कारणों की गहराई से जाँच-पड़ताल कर सकेगा
iii. सम्पादक और उसकी टीम
iv. ए.बी.पी., न्यूज़ 18, (नेशनल ज्योग्रेफिक चैनल, डिस्कवरी चैनल आदि-आदि)
v. स्थायित्व, संग्रहणीयता, स्पष्टता, समय-असमय कहीं से भी पढ़ने की सुविधा

6. **'जगमगाते गाँव' अथवा 'शहरीकरण की समस्या' विषय पर एक आलेख लिखिए। (5)**

उत्तर-

1. आलेख अथवा फीचर-लेखन:

   प्रस्तुति (2)

   विषय वस्तु (2)

   भाषा (1)

खंड - ग

7. **निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8)**
   यह समिधा - ऐसी आज हठीला बिरला सुलगाएगा
   यह अद्वितीय - यह मेरा-यह मैं स्वयं विसर्जित
   यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
   है गर्व भरा मदमाता
   पर इसको भी पंक्ति को दे दी।
   उत्तर- यह समिधा ....दे दो।
   - **कवि -** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
   - **कविता -** यह दीप अकेला
   - **प्रसंग -** कवि ने दीप के प्रतीक व्यक्ति की सत्ता को सामाजिक सत्ता के साथ जोड़ने का प्रयास।
   - **व्याख्या बिंदु -**
     - व्यक्ति की सत्ता - यज्ञ की हवन सामग्री
     - हठीले निराले व्यक्ति द्वारा ही अग्नि को प्रज्ज्वलित करना
     - स्वयं को अनुपम एवं अनोखा स्वीकारना
     - समाजिक सत्ता में स्वयं को विलीन कर ‘स्व’ का त्याग
     - गर्व और स्नेह से भरा दीप अकेला, इसे भी पंक्ति (सामाजिक सत्ता) में विलीन कर दो
   - **विशेष -**
     - लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग
     - प्रतीकात्मक शैली
     - रूपक अलंकार
     - भाषा सहज, सरल एवं प्रवाहमयी
8. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)**
   i. **‘कार्नेलिया का गीत’ के आधार पर महान भारत की विशेषताओं का उल्लेख अपने शब्दों में कीजिए।**
   ii. **‘विद्यापति’ के संकलित पदों के आधार पर नायिका की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**
   iii. **‘वसंत आया’ कविता में कवि की मुख्य चिंता क्या है और क्यों? स्पष्ट कीजिए।**

   उत्तर-
   i. भारत की विशेषताएँ-
      - प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत एवं मधुमय
      - यहाँ सूर्य की पहली किरणों का पड़ना
      - अनजान व्यक्तियों को भी आश्रय मिलना
      - लोगों के हृदय दया, करुणा एवं सहानुभूति की भावना से ओतप्रोत
      - महान एवं गौरवशाली संस्कृति

ii.
- वियोग की पीड़ा झेलने को विवश एवं एकाकी जीवन बिताने में असमर्थ
- नायिका का शरीर क्षीण हो जाना
- नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहना
- कोयल की कूक तथा भौरों की झंकार सुनते ही तुरंत कान बन्द कर लेना
- प्रेम के स्वरूप का प्रतिक्षण बदलना अतः नायिका द्वारा प्रेम के अनुभव को बताने में असमर्थता

iii.
- व्यस्तता और मशीनी जीवन के कारण मनुष्य का प्रकृति से नाता टूटना
- प्रकृति में आ रहे परिवर्तनों को न देख पाना, न अनुभव करना
- चिंता का कारण - वसंत जैसी मादक ऋतु का भी दफ्तर की छुट्टी तथा कलेण्डर से पता चलना

9. **निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: (3+3=6)**
   i. **पुलकि सरीर सभाँ भए ठाड़े।**
   नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।
   ii. **मामा-मामी का रहा प्यार,**
   भर जलद धरा को ज्यों अपार;
   वे ही सुख-दुख में रहे न्यस्त,
   तेरे हित सदा समस्त व्यस्त;
   iii. **चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर,**
   प्रलय चल रहा अपने पथ पर।
   मैंने निज दुर्बल पद-थल पर,
   उससे हारी-होड़ लगाई।

उत्तर-

i. पुलकि सरीर .... जल बाढ़े।।
- **भाव सौन्दर्य-**
  - राम के प्रति अनन्य प्रेम के कारण भरत का पुलकित होकर सभा में खड़े हो जाना
  - उनके कमल नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की बाढ़ आना
- **शिल्प सौन्दर्य-**
  - नीरज नयन नेह जल - रूपक, उपमा एवं अनुप्रास अलंकार
  - भाषा - अवधी
  - छंद - चैपाई
  - रस - शांत
  - छंदबद्ध काव्य पंक्तियाँ
  - भरत का भ्रातृस्नेह

ii. मामा-मामी.......................................व्यस्त;
   - **भाव सौन्दर्य-**
      - विवाहोपरान्त सरोज का अपनी नानी की स्नेहमयी गोद में शरण लेना
      - वहाँ मामा-मामी के भरपूर स्नेह की वर्षा
   - **शिल्प सौन्दर्य-**
      - उपमा, दृष्टांत अलंकार
      - मामा-मामी, सदा समस्त - अनुप्रास अलंकार
      - संस्कृतनिष्ठ शब्दावली
      - छंदमुक्त कविता
      - भाषा सरल एवं सुबोध

iii. चढ़कर...लगाई।
   - **भाव सौन्दर्य-**
      - प्रलय अर्थात दुख स्वयं देवसेना के जीवन रथ पर सवार
      - अपनी दुर्बलताओं और हारने की निश्चितता के बावजूद देवसेना का प्रलय से लोहा लेना
   - **शिल्प सौन्दर्य-**
      - देवसेना की मनःस्थिति का यथार्थ वर्णन
      - जीवन रथ - रूपक अलंकार
      - हारी होड़ - अनुप्रास अलंकार
      - निराशा और वेदना का मार्मिक चित्रण
      - भाषा में प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता एवं संगीतात्मकता

10. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (6)**
    संवदिया डटकर खाता है और 'अफर' कर सोता है, किंतु हरगोबिन की नींद नहीं आ रही है...... यह उसने क्या किया? क्या कर दिया? वह किसलिए आया था? वह झूठ क्यों बोला? नहीं....... नहीं, सुबह उठते ही वह बूढ़ीमाता को बड़ी बहुरिया का सही संवाद सुना देगा।
    उत्तर- संवदिया.......................................सुना देगा।
    - **पाठ -** 'संवदिया'
    - **लेखक -** फणीश्वरनाथ 'रेणु'
    - **प्रसंग -** हरगोबिन का बड़ी बहुरिया के मायके संदेश न सुना सकने पर आत्मग्लानि भरा चिंतन
    - **व्याख्या बिंदु-**
      - संवदिया के खाने, सोने में मनमानी
      - बहुरिया के मायके संदेश न दे पाने के कारण नींद न आना
      - आत्म मंथन के उपरान्त संदेश सुना देने का निर्णय लेना
    - **विशेष-**

- खड़ी बोली
- वर्णनात्मक शैली
- 'डटकर खाना', 'अफर कर सोना' - भाषा का विशेष प्रयोग
- आत्मचिंतन

11. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (4+4=8)**
    i. **हिंदी-उर्दू के विषय में रामचंद्र शुक्ल के विचारों का उल्लेख करते हुए अपना मत लिखिए कि क्या ये दोनों एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं? पुष्टि में एक तर्क भी दीजिए।**
    ii. **संग्रहालय के लिए धरोहरों को एकत्र करने में 'कच्चा चिट्ठा' के लेखक के प्रयासों पर टिप्पणी कीजिए।**
    iii. **'शेर' कथा की प्रतीकात्मकता स्पष्ट करते हुए इसके संदेश का उल्लेख कीजिए।**

    उत्तर-

    i.
    - लेखक द्वारा हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाओं का प्रयोग
    - गद्य की खड़ी बोली में सभी लेखकों ने हिन्दी-उर्दू दोनों का समान रूप से प्रयोग किया था
    - हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाएँ अलग-अलग मान्य
    - हिन्दुस्तानी भाषा की ये दोनों शैलियाँ हो सकती है।

      (विद्यार्थियों के उपयुक्त विचार भी स्वीकार्य)

    ii.
    - लेखक ने प्रयाग संग्रहालय के लिए पसोवा, कौशांबी, मद्रास (चेन्नई) तथा प्रयाग के आस-पास कई स्थानों में
    - घूम-घूमकर मूर्तियाँ, सिक्के, मनके, मोहरे, मृण्मूर्तियाँ, हस्तलिखित पुस्तकें आदि एकत्रित किए।
    - व्यास जी की सबसे बड़ी देन इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय
    - पुरातन संबंधी संग्रहालय की विभिन्न धरोहर-सामग्री का संकल्प बगैर विशेष व्यय के कर पाना व्यास जी का अपना विशिष्ट कौशल है।
    - 'शेर' व्यवस्था का प्रतीक।
    - व्यवस्था तभी तक खामोश जब तक उसकी आज्ञाओं, इच्छाओं का पालन होता रहे

    iii. संदेश-
    - विरोध होने पर व्यवस्था का शेर की तरह मुँह फाड़ लेना तथा आक्रमक होना निश्चित
    - अन्यायी सत्ता को उखाड़ फेंकने का प्रयास करते हुए अपना रास्ता स्वयं बनाना

12. **निर्मल वर्मा अथवा हजारीप्रसाद द्विवेदी के जीवन और रचनाओं का संक्षित परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। (6)**

    अथवा

    'जायसी' अथवा केदारनाथ सिंह के जीवन और रचनाओं का परिचय देते हुए उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

    उत्तर-

    - <u>निर्मल वर्मा</u>
        - **जन्म एवं जीवन परिचय -**

- शिमला में जन्म।
- दिल्ली विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. किया और फिर अध्यापन कार्य
- चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य-विद्या संस्थान प्राग के आमंत्रण पर वहाँ गए।

- **रचनाएँ-**
  - 'जलती झाड़ी', 'परिंदे', 'वे दिन', 'शब्द और स्मृति', 'ढलान से उतरते हुए' आदि।
- **साहित्यिक विशेषताएँ-**
  - भाषा-शैली में एक अनोखी कसावट
  - विचार-सूत्र की गहनता को विविध उद्धरणों से रोचक बनाना
  - शब्द चयन में जटिलता न होते हुए भी उनकी वाक्य-रचना में मिश्र और संयुक्त वाक्यों की प्रधानता
  - उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग
  - भाषा-शैली में अनेक नवीन प्रयोग

- <u>हजारी प्रसाद द्विवेदी</u>
  - **जन्म एवं जीवन परिचय -**
    - आरत दूबे के छपरा गाँव, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश में जन्म।
    - काशी से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण, काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त की।
    - 1950 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने।
    - 1952-53 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष
    - 1955 में प्रथम राजभाषा आयोग के सदस्य राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त
    - उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, लखनऊ विश्वविद्यालय से डी.लिट् की उपाधि तथा पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित
    - संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बाँग्ला आदि तथा अनेक विषयों - इतिहास, दर्शन, संस्कृति, धर्म आदि का भी विशेष ज्ञान
  - **रचनाएँ -**
    - 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'कुटज', 'आलोक पर्व', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'अनामदास का पोथा',
  - **साहित्यिक विशेषताएँ-**
    - भाषा सरल और प्रांजल
    - व्यक्तित्व - व्यंजकता और आत्मपरकता उनकी शैली की विशेषता
    - व्यंग्य शैली के प्रयोग से उनके निबंधों पर पांडित्य का बोझ नहीं
    - हिन्दी की गद्य शैली को एक नया रूप

अथवा

-
    - **मलिक मुहम्मद जायसी**
        - **जन्म एवं जीवन परिचय-**
            - अमेठी उत्तर प्रदेश के निकट जायस गाँव में जन्म
            - जायस में जन्म होने के कारण जायसी
            - पिता की मृत्यु के कारण पालन-पोषण ननिहाल में
            - सैय्यद अशरफ और शेख बुरहान से शिक्षा प्राप्त की
            - सूफी संत परंपरा में
        - **रचनाएँ-**
            - पद्मावतअखरावटआखिरी कलाम आदि
        - **साहित्यिक विशेषताएँ-**
            - मसनवी शैली
            - ठेठ अवधी भाषा से उत्कृष्ट साहित्य की रचना
            - सूफी प्रेममार्गी कवि
            - प्रेम का लोकधर्मी रूप
            - दोहा-चैपाई छंद का प्रयोग
            - प्रौढ़ और गंभीर काव्य-शैली
            - मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा अलंकारों का प्रयोग
    - **केदार नाथ सिंह**
        - **जन्म एवं जीवन परिचय -**
            - जन्म बलिया जिले के चेकिया गाँव में
            - काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. तथा पी.एच.डी. की उपाधि
            - गोरखपुर में हिन्दी के प्राध्यापक फिर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर
            - आजकल दिल्ली में स्वतंत्र लेखन
        - **रचनाएँ-**
            - 'अकाल में सारस', 'अभी बिलकुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', आलोचनात्मक पुस्तक - 'कल्पना और छायावाद', निबंध संग्रह-'मेरे समय के शब्द'
        - **साहित्यिक विशेषताएँ-**
            - कविताओं में बिंब-विधान
            - मानवीय संवेदनाएँ और विचार बोध
            - शिल्प में बातचीत की सहजता और अपनापन

13. **'सूरदास' के जीवन से प्राप्त होने वाले जीवन-मूल्यों का उल्लेख कर आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता समझाइए। (5)**
    उत्तर- सूरदास के जीवन से प्राप्त जीवन-मूल्य-

- हार न मानने की प्रवृत्ति
- सत्य-अहिंसा से भरा व्यक्तित्व
- प्रतिकार की भावना से दूर
- क्षमाशील, सहिष्णु व आशावादी
- पुनर्निर्माण एवं जिजीविषा की भावना
- संघर्षशील, आत्मविश्वासी
- निर्णय लेने की पूर्ण क्षमता
- आज के संदर्भ में इन सभी नैतिक मूल्यों की आवश्यकता, मानवता का विकास संभव
  (जीवन-मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट करने के संदर्भ में विद्यार्थियों के स्वतंत्र विचार भी मान्य)

14. **i. 'अपना मालवा' के माध्यम से लेखक ने पर्यावरण से जुड़े किन मुद्दों को उठाया है? किन्हीं तीन का उल्लेख कर उनका समाधान भी सुझाइए। (5)**
    ii. 'आरोहण' कहानी के प्रमुख पात्र के जीवन संघर्ष पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। (5)
    उत्तर-
    i.
    - लेखक ने 'अपना मालवा' के माध्यम से मौसम, ऋतुएँ, नदियाँ, जन जीवन तथा संस्कृति आदि के मुद्दों का उठाया है।
    - अतिवृष्टि, नदियों में बाढ़, यातायात के साधन ठप
    - मालवा में पहले जैसा पानी अब नहीं गिरता
    - पर्यावरण असंतुलित, औद्योगिक विकास के कारण नदियों का गंदे नालों में बदलना
    - खाऊ-उजाड़ू सभ्यता यूरोप तथा अमेरिका की देन
      समाधान-
    - पर्यावरण के प्रति लोगों को सचेत करना
    - जीवन पद्धति में 'सादा जीवन उच्च विचार' की भावना लाना
    - प्रकृति की रक्षा और उससे तादात्म्य

    ii. जीवन संघर्ष-
    - भाई के शहर की ओर पलायन से भूप दादा का अकेले पड़ जाना
    - भू-स्खलन से घर, खेती का सर्वनाश, माता-पिता की मृत्यु
    - भू-स्खलन से फैले मलबे को हटाना
    - पहाड़ों की विषम परिस्थितियाँ सहकर भी अपनी जन्मभूमि न छोड़ना, उससे प्यार
    - घर तथा खेतों को ढलवां बनाना, झरने को मोड़कर खेतों तक लाना
    - पत्नी की आत्महत्या और नाबालिग बेटे का घर छोड़ जाने के दर्द से भी संघर्ष का बढ़ना
    - रोटी, कपड़ा, मकान तीनों की अभाव-ग्रस्त स्थिति के उपरान्त भी कठोर परिश्रम